



शिक्षकों के शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यचर्या संबंधी व्यवहार का विद्यार्थियों के समायोजन एवं समग्र विकास पर प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

¹एकता सिंधु, ²डॉ. अमित कुमार शर्मा (सहायक प्राध्यापक)

¹शोधार्थी, ²शोध निर्देशक

¹⁻²विभाग: शिक्षा शास्त्र, एशियन इंटरनैशनल विश्वविद्यालय इंफाल, दक्षिणी, मणिपुर

सारांश

विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता केवल पाठ्यक्रम, संसाधनों और परीक्षा-परिणामों से निर्धारित नहीं होती; कक्षा तथा विद्यालय में शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों के सीखने, आत्मबोध, भावनात्मक सुरक्षा, सामाजिक संबंधों, अनुशासन, सहभागिता और व्यक्तित्व-विकास को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में शिक्षकों के शैक्षणिक व्यवहार—विषय-ज्ञान, स्पष्ट अध्यापन, प्रश्नोत्तर, प्रतिपुष्टि, निष्पक्ष मूल्यांकन, विभेदित शिक्षण और प्रेरणा—तथा सह-पाठ्यचर्या संबंधी व्यवहार—खेल, कला, सांस्कृतिक गतिविधि, क्लब, नेतृत्व, परामर्श और सामुदायिक सहभागिता—का विद्यार्थियों के समायोजन एवं समग्र विकास पर विश्लेषण किया गया है। अध्ययन वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक एवं दस्तावेजी प्रकृति का है। शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, विद्यालयी समायोजन, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, आत्मनिर्णय और समग्र विकास से संबंधित प्रमुख वैचारिक तथा शोध-आधारित निष्कर्षों का विषयगत संश्लेषण किया गया है। विश्लेषण से संकेत मिलता है कि सहायक, लोकतांत्रिक, संवेदनशील और उच्च अपेक्षा वाला शिक्षक व्यवहार शैक्षणिक संलग्नता, आत्मविश्वास, सहपाठी संबंध, आत्मनियमन और विद्यालय से जुड़ाव को बढ़ाता है; जबकि अपमानजनक भाषा, पक्षपात, अत्यधिक दंड, केवल अंक-केंद्रित दृष्टि और सह-पाठ्यचर्या की उपेक्षा भय, निष्क्रियता, बहिष्करण तथा कुसमायोजन को बढ़ा सकती है।

निष्कर्षतः शिक्षक की भूमिका ज्ञान-प्रदाता से अधिक विकास-सुविधादाता की है। समग्र विकास के लिए कक्षा-अध्यापन और सह-पाठ्यचर्या को पृथक क्षेत्रों की तरह नहीं, बल्कि एकीकृत अनुभव के रूप में देखना आवश्यक है।

मुख्य शब्द: शिक्षक व्यवहार, शैक्षणिक व्यवहार, सह-पाठ्यचर्या, विद्यार्थी समायोजन, समग्र विकास, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध।

1. परिचय

विद्यालय बच्चे के लिए परिवार के बाद सबसे प्रभावशाली सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेशों में से एक है। यहाँ वह विषय-वस्तु के साथ समय-प्रबंधन, नियम, सहयोग, प्रतिस्पर्धा, नेतृत्व, असफलता से निपटना, आत्म-अभिव्यक्ति और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे जीवन-कौशल भी अर्जित करता है। इन अनुभवों के केंद्र में शिक्षक होता है। शिक्षक का बोलने का ढंग, प्रश्नों को स्वीकार करने की तत्परता, त्रुटि पर प्रतिक्रिया, अनुशासन की शैली और अवसर-वितरण विद्यार्थियों को यह संकेत देते हैं कि विद्यालय उनके लिए कितना सुरक्षित, न्यायपूर्ण और अर्थपूर्ण स्थान है।

1.1 समस्या कथन

विद्यालयों में प्रायः शिक्षक की प्रभावशीलता को पाठ पूरा करने, परीक्षा-परिणाम और अनुशासन बनाए रखने से जोड़ा जाता है। किंतु विद्यार्थी का समायोजन बहुआयामी है—उसे विद्यालयी नियमों, शिक्षक अपेक्षाओं, सहपाठी समूह, उपलब्धि-दबाव, किशोरावस्था की भावनाओं और विविध सामाजिक पृष्ठभूमियों के साथ संतुलन स्थापित करना पड़ता है। यदि शिक्षक केवल शैक्षणिक उपलब्धि पर केंद्रित रहे और भावनात्मक-सामाजिक आवश्यकताओं की उपेक्षा करे, तो उच्च अंक के बावजूद विद्यार्थी में तनाव,



अकेलापन, कम आत्मसम्मान या विद्यालय से दूरी विकसित हो सकती है।

दूसरी ओर सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ अक्सर अतिरिक्त मान ली जाती हैं, जबकि खेल, कला, वाद-विवाद, नाटक, संगीत, विज्ञान-क्लब, सामुदायिक सेवा और छात्र-नेतृत्व ऐसे संदर्भ देते हैं जिनमें विद्यार्थी सहयोग, आत्म-अनुशासन, सृजनात्मकता, नेतृत्व, सहिष्णुता और पहचान विकसित करते हैं। यहाँ शिक्षक का व्यवहार निर्णायक है—क्या वह सभी विद्यार्थियों को अवसर देता है, क्या असफलता को सीखने का अवसर मानता है, और क्या प्रतिभा की विविधता को स्वीकार करता है।

1.2 अध्ययन का महत्व

समकालीन शिक्षा में सीखने के परिणामों के साथ कल्याण, जीवन-कौशल, समावेशन और सामाजिक-भावनात्मक विकास पर बढ़ता बल इस विषय को विशेष प्रासंगिकता देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 शिक्षा को संज्ञानात्मक उपलब्धि तक सीमित न रखकर कला, खेल, नैतिकता, संवेदनशीलता, रचनात्मकता और अनुभवात्मक अधिगम से जोड़ती हैं। इस संदर्भ में शिक्षक व्यवहार विद्यालयी गुणवत्ता की सूक्ष्म लेकिन केंद्रीय इकाई है।

1.3 अध्ययन के उद्देश्य

1. शिक्षकों के प्रमुख शैक्षणिक व्यवहारों की पहचान कर विद्यार्थी समायोजन पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करना।
2. सह-पाठ्यचर्या संबंधी शिक्षक व्यवहार और विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक तथा सृजनात्मक विकास के संबंध को समझना।
3. शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, कक्षा-वातावरण और विद्यालयी जुड़ाव के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करना।
4. सकारात्मक तथा नकारात्मक शिक्षक व्यवहारों के संभावित परिणामों की तुलनात्मक व्याख्या करना।
5. विद्यालय, शिक्षक-शिक्षा और प्रशासन के लिए व्यवहारिक सुझाव देना।

1.4 प्रमुख शोध-प्रश्न

- कौन-से शैक्षणिक व्यवहार विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं भावनात्मक समायोजन को प्रभावित करते हैं?
- सह-पाठ्यचर्या में शिक्षक की सहभागिता नेतृत्व, आत्मविश्वास, सहयोग और सामाजिक समायोजन को कैसे आकार देती है?
- निष्पक्ष, संवेदनशील और स्वायत्तता-सहायक व्यवहार समग्र विकास में किस प्रकार मध्यस्थ भूमिका निभाता है?

2. वैचारिक पृष्ठभूमि

2.1 शिक्षक व्यवहार की अवधारणा

शिक्षक व्यवहार से आशय उन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं, अपेक्षाओं, संप्रेषण-शैलियों और निर्णयों से है जिनके माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों के सीखने और विद्यालयी अनुभव को प्रभावित करता है। इसमें विद्यार्थियों को संबोधित करने की भाषा, समय देना, प्रश्नों का स्वागत, गलती पर प्रतिक्रिया, अनुशासन, मूल्यांकन, समूह-निर्माण, परामर्श, गतिविधि-चयन और अभिभावकों से संवाद शामिल हैं।

2.2 शैक्षणिक व्यवहार



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 14, Issue 1, January-March 2026

शैक्षणिक व्यवहार में विषय-वस्तु की स्पष्टता, पाठ-योजना, उदाहरणों का चयन, सक्रिय अधिगम, प्रश्न पूछना, विद्यार्थियों की पूर्व-धारणाओं को जानना, सीखने की गति में विविधता स्वीकार करना, समय पर प्रतिपुष्टि देना, मूल्यांकन की पारदर्शिता और उच्च किंतु यथार्थवादी अपेक्षाएँ शामिल हैं। प्रभावी व्यवहार विद्यार्थी को “मैं सीख सकता/सकती हूँ” का अनुभव देता है और आत्म-प्रभावकारिता, उपलब्धि-प्रेरणा तथा कठिन कार्यों में टिके रहने की प्रवृत्ति को मजबूत करता है।

2.3 सह-पाठ्यचर्या संबंधी व्यवहार

सह-पाठ्यचर्या संबंधी शिक्षक व्यवहार उन गतिविधियों से जुड़ा है जो औपचारिक विषय-अध्ययन को विस्तृत करती हैं—खेल, योग, कला, संगीत, नाटक, साहित्यिक गतिविधियाँ, वाद-विवाद, विज्ञान एवं पर्यावरण क्लब, स्काउट-गाइड, सामुदायिक सेवा, भ्रमण और छात्र परिषद आदि। यहाँ शिक्षक आयोजक, मार्गदर्शक, प्रशिक्षक, प्रेरक और निष्पक्ष अवसर-वितरक की भूमिका निभाता है।

2.4 विद्यार्थी समायोजन

समायोजन एक गतिशील प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी अपनी आवश्यकताओं, क्षमताओं और भावनाओं को विद्यालय की अपेक्षाओं, सामाजिक संबंधों और उपलब्ध संसाधनों के साथ संतुलित करता है। शैक्षणिक समायोजन में अध्ययन-अभ्यास और परीक्षा-दबाव से निपटना; सामाजिक समायोजन में सहपाठियों व शिक्षकों से संबंध; तथा भावनात्मक समायोजन में तनाव, निराशा, असफलता और आत्मनियमन शामिल हैं।

2.5 समग्र विकास

समग्र विकास का अर्थ संज्ञानात्मक, भाषिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक, शारीरिक, सृजनात्मक और जीवन-कौशल संबंधी विकास का संतुलित विस्तार है। इस दृष्टि में विद्यार्थी केवल अंक प्राप्त करने वाला नहीं, बल्कि अनुभव करने, प्रश्न पूछने, संबंध बनाने, निर्णय लेने और समाज में उत्तरदायी भूमिका निभाने वाला पूर्ण व्यक्ति है।

3. सैद्धांतिक आधार

3.1 सामाजिक अधिगम दृष्टिकोण

सामाजिक अधिगम दृष्टिकोण के अनुसार बच्चे प्रत्यक्ष निर्देश के साथ अवलोकन, अनुकरण और सामाजिक प्रतिक्रिया से भी सीखते हैं। शिक्षक यदि सम्मानपूर्वक संवाद करता है, मतभेद में संयम रखता है और सहयोग का प्रदर्शन करता है, तो विद्यार्थी इन्हीं व्यवहारों को सहपाठी संबंधों में अपनाने की संभावना रखते हैं। इसके विपरीत व्यंग्य, अपमान या आक्रामक अनुशासन सामाजिक रूप से वैध व्यवहार के रूप में ग्रहण किया जा सकता है।

3.2 आत्मनिर्णय सिद्धांत

आत्मनिर्णय सिद्धांत स्वायत्तता, दक्षता और संबंधबोध को मूल मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ मानता है। शिक्षक का स्वायत्तता-सहायक व्यवहार—विकल्प देना, कारण समझाना, विद्यार्थी की आवाज़ सुनना—आंतरिक प्रेरणा को बढ़ा सकता है। स्पष्ट प्रतिपुष्टि दक्षता-बोध को और गर्मजोशी संबंधबोध को मजबूत करती है।

3.3 पारिस्थितिक दृष्टिकोण

पारिस्थितिक दृष्टिकोण विद्यार्थी को अलग-थलग इकाई नहीं मानता। परिवार, कक्षा, सहपाठी, विद्यालय संस्कृति और व्यापक सामाजिक संदर्भ परस्पर प्रभाव डालते हैं। शिक्षक कक्षा के सूक्ष्म परिवेश को संरचित करता है; इसलिए उसका व्यवहार विद्यार्थी और विद्यालय के बीच प्रतिदिन होने वाली अंतःक्रिया का प्रमुख घटक है।

3.4 संबंधपरक दृष्टिकोण

शोध-साहित्य में शिक्षक-विद्यार्थी संबंध की निकटता, संघर्ष और निर्भरता जैसे आयामों को विद्यालयी



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 14, Issue 1, January-March 2026

अनुकूलन से जोड़ा गया है। सुरक्षित और सम्मानपूर्ण संबंध विद्यार्थी को सहायता माँगने, त्रुटि स्वीकार करने और जोखिम लेकर सीखने की अनुमति देता है। लगातार संघर्षपूर्ण संबंध नकारात्मक आत्म-छवि, विरोधी व्यवहार और विद्यालय से दूरी का चक्र बना सकता है।

सैद्धांतिक दृष्टि	मुख्य अवधारणा	शिक्षक व्यवहार	संभावित परिणाम
सामाजिक अधिगम	अवलोकन व अनुकरण	सम्मान, सहयोग, संयम	सामाजिक कौशल
आत्मनिर्णय	स्वायत्तता, दक्षता, संबंध	विकल्प, प्रतिपुष्टि, समर्थन	प्रेरणा व संलग्नता
पारिस्थितिक	परिवेशों की अंतःक्रिया	कक्षा-वातावरण, परिवार-संपर्क	विद्यालयी जुड़ाव
संबंधपरक	निकटता बनाम संघर्ष	विश्वास, उपलब्धता, निष्पक्षता	भावनात्मक सुरक्षा

4. साहित्य समीक्षा

4.1 शिक्षक-विद्यार्थी संबंध और उपलब्धि

शिक्षा-मनोविज्ञान और कक्षा-अध्ययन का एक स्थायी निष्कर्ष यह है कि सीखने की गुणवत्ता केवल शिक्षण तकनीक पर निर्भर नहीं रहती; शिक्षक-विद्यार्थी संबंध उसकी प्रभावशीलता का सामाजिक-भावनात्मक आधार बनाता है। Pianta, Hamre और सहयोगियों के कार्यों में भावनात्मक समर्थन, कक्षा-संगठन और निर्देशात्मक समर्थन को कक्षा-अंतःक्रिया के महत्वपूर्ण आयाम माना गया है। निकट, सहायक और कम-संघर्षपूर्ण संबंध विशेषकर उन विद्यार्थियों के लिए सुरक्षा-कारक बन सकते हैं जो शैक्षणिक या सामाजिक जोखिम का सामना कर रहे हों।

4.2 प्रतिपुष्टि, अपेक्षा और प्रेरणा

Hattie और Timperley ने प्रतिपुष्टि की शक्ति पर बल दिया, पर उसकी उपयोगिता इस बात पर निर्भर करती है कि वह विद्यार्थी को कार्य, प्रक्रिया और आत्मनियमन के बारे में उपयोगी सूचना देती है या केवल प्रशंसा/निंदा तक सीमित रहती है। शिक्षक की उच्च अपेक्षा तब सकारात्मक होती है जब वह अवसर, समर्थन और चुनौती के साथ जुड़ी हो; केवल दबाव के रूप में दी गई अपेक्षा चिंता और असफलता-भय को बढ़ा सकती है।

4.3 सामाजिक-भावनात्मक अधिगम

सामाजिक-भावनात्मक अधिगम संबंधी शोध आत्म-जागरूकता, आत्म-प्रबंधन, सामाजिक जागरूकता, संबंध-कौशल और उत्तरदायी निर्णय को शैक्षणिक जीवन से जुड़ी क्षमताओं के रूप में देखता है। शिक्षक इन क्षमताओं का औपचारिक पाठ पढ़ाए बिना भी दैनिक अंतःक्रिया, समूह-कार्य, विवाद-समाधान और कक्षा-नियमों के माध्यम से विकास कर सकता है।

4.4 सह-पाठ्यचर्या और विकास

सुव्यवस्थित सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ विद्यालय से जुड़ाव, साथियों के साथ सकारात्मक संबंध, नेतृत्व और समय-प्रबंधन को बढ़ा सकती हैं। किंतु प्रभाव स्वतः नहीं होता। अत्यधिक प्रतिस्पर्धी, चयनवादी या अपमानजनक गतिविधि-संस्कृति कुछ विद्यार्थियों को बाहर भी कर सकती है। इसलिए शिक्षक की समावेशी भूमिका महत्वपूर्ण है।

4.5 भारतीय संदर्भ

भारतीय विद्यालयों में बड़े वर्ग, परीक्षा-केंद्रित संस्कृति, भाषाई विविधता, सामाजिक-आर्थिक असमानता और संसाधनों की विषमता शिक्षक व्यवहार के प्रभाव को विशिष्ट बनाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने अनुभवात्मक, कला-समेकित और खेल-समेकित अधिगम, आलोचनात्मक चिंतन तथा समग्र प्रगति की



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 14, Issue 1, January-March 2026

अवधारणाओं पर बल देकर शिक्षक की भूमिका को व्यापक किया है।

4.6 साहित्य समीक्षा का विषयगत सारांश

विषय	मुख्य निष्कर्ष	समायोजन	समग्र विकास
भावनात्मक समर्थन	गर्मजोशी व संवेदनशीलता सहभागिता बढ़ाती है	सुरक्षा	आत्मसम्मान
निर्देशात्मक स्पष्टता	लक्ष्य व चरण स्पष्ट	शैक्षणिक दबाव कम	संज्ञानात्मक दक्षता
प्रतिपुष्टि	विशिष्ट व सुधारोन्मुख	त्रुटि-भय कम	आत्मनियमन
निष्पक्षता	समान सम्मान व पारदर्शिता	विश्वास	न्याय-बोध
सह-पाठ्यचर्या	संरचित सहभागिता	सहपाठी संबंध	नेतृत्व व सृजनात्मकता
दंडात्मक व्यवहार	अपमान व भय	कुसमायोजन	कम आत्मविश्वास

4.7 शोध-अंतराल

अनेक अध्ययन शिक्षक प्रभावशीलता को उपलब्धि से, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध को भावनात्मक परिणामों से, अथवा सह-पाठ्यचर्या को अलग से व्यक्तित्व-विकास से जोड़ते हैं। किंतु विद्यालय के दैनिक अनुभव में ये क्षेत्र अलग नहीं होते। वही शिक्षक जो कक्षा में प्रतिपुष्टि देता है, खेल या सांस्कृतिक गतिविधि में अवसर भी बाँट सकता है; वही विद्यार्थी परीक्षा, मित्रता और पहचान के प्रश्नों से एक साथ जूझता है। इसलिए आवश्यकता ऐसे विश्लेषण की है जो शैक्षणिक और सह-पाठ्यचर्या व्यवहार को संयुक्त रूप से विद्यार्थी के समायोजन और समग्र विकास के संदर्भ में देखे।

5. अनुसंधान पद्धति

5.1 शोध-डिजाइन

अध्ययन वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक एवं दस्तावेजी है। विश्लेषण की इकाई शिक्षक का व्यवहार है और परिणाम-क्षेत्र विद्यार्थी समायोजन तथा समग्र विकास हैं। अवधारणात्मक साहित्य, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध संबंधी शोध, प्रेरणा एवं प्रतिपुष्टि साहित्य, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, सह-पाठ्यचर्या सहभागिता और भारतीय नीतिगत दस्तावेजों को विषयगत रूप से पढ़ा गया है।

5.2 शोध की प्रकृति

यह शोध कारणात्मक सांख्यिकीय निष्कर्ष प्रस्तुत नहीं करता। इसका उद्देश्य उपलब्ध सिद्धांतों और शोध-निष्कर्षों में उभरने वाले सामान्य पैटर्न की व्याख्या करना और प्रभाव की संभावित प्रक्रियाओं—भावनात्मक सुरक्षा, स्वायत्तता, दक्षता-बोध, निष्पक्षता, विद्यालयी जुड़ाव और सामाजिक सहभागिता—को स्पष्ट करना है।

5.3 विश्लेषण के आयाम

विश्लेषण के लिए शिक्षक व्यवहार को दो समूहों में विभाजित किया गया: शैक्षणिक—स्पष्टता, सहभागिता, प्रतिपुष्टि, मूल्यांकन, अपेक्षा, विभेदित शिक्षण, अनुशासन और सहायता; तथा सह-पाठ्यचर्या—अवसर-वितरण, प्रोत्साहन, टीम-निर्माण, नेतृत्व, खेलभावना, कला-संवर्धन, परामर्श और सामुदायिक सहभागिता। विद्यार्थी परिणामों को शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक, नैतिक और सृजनात्मक आयामों में देखा गया।

5.4 स्रोत एवं चयन-तर्क

प्रमुख स्रोतों में शिक्षक-विद्यार्थी अंतःक्रिया, कक्षा-वातावरण, प्रेरणा, प्रतिपुष्टि और सामाजिक-भावनात्मक अधिगम पर व्यापक रूप से उद्धृत शैक्षिक शोध तथा भारत की समकालीन शिक्षा-नीति से संबंधित दस्तावेज सम्मिलित हैं। किसी एक अध्ययन को सार्वभौमिक सत्य मानने के बजाय विभिन्न निष्कर्षों में उभरने वाले सामान्य संबंधों का संश्लेषण किया गया है।



5.5 अध्ययन की सीमाएँ

यह प्राथमिक क्षेत्र-सर्वेक्षण, प्रयोग या सहसंबंधात्मक सांख्यिकीय अध्ययन नहीं है; इसलिए संबंधों को विश्लेषणात्मक प्रवृत्तियों के रूप में समझना चाहिए। शिक्षक व्यवहार का प्रभाव आयु, लिंग, सामाजिक पृष्ठभूमि, विद्यालय प्रकार, कक्षा आकार, विषय, स्थानीय संस्कृति और विद्यार्थी के पूर्व-अनुभवों से बदल सकता है। सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों की उपलब्धता भी विद्यालयों में समान नहीं है।

तत्व	विवरण	उद्देश्य
शोध प्रकार	वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक, दस्तावेजी	व्यवहार व प्रभाव की व्याख्या
व्यवहार क्षेत्र	शैक्षणिक व सह-पाठ्यचर्या	दैनिक शिक्षक क्रियाओं की पहचान
परिणाम क्षेत्र	समायोजन व समग्र विकास	बहुआयामी विद्यार्थी परिणाम
मध्यस्थ प्रक्रिया	सुरक्षा, प्रेरणा, संबंधबोध, निष्पक्षता	प्रभाव का तंत्र समझना
सीमा	प्राथमिक सांख्यिकीय डेटा नहीं	दावों को साहित्य-आधारित रखना

6. विश्लेषणात्मक रूपरेखा

प्रस्तावित रूपरेखा में शिक्षक व्यवहार को विद्यार्थी परिणाम तक सीधे जाने वाली एकमात्र शक्ति नहीं माना गया है। इसके बीच कक्षा-वातावरण, भावनात्मक सुरक्षा, स्वायत्तता, दक्षता-बोध, सहपाठी संस्कृति और विद्यालयी जुड़ाव जैसे मध्यस्थ घटक कार्य करते हैं। इसी कारण समान व्यवहार अलग संदर्भों में भिन्न परिणाम दे सकता है।

7. शैक्षणिक व्यवहार का विद्यार्थी समायोजन पर प्रभाव

7.1 अध्यापन की स्पष्टता और संज्ञानात्मक समायोजन

जब शिक्षक पाठ के उद्देश्य स्पष्ट करता है, कठिन अवधारणा को छोटे चरणों में विभाजित करता है, उदाहरणों को विद्यार्थियों के अनुभव से जोड़ता है और समझ की जाँच करता है, तो सीखने की अनिश्चितता कम होती है। इससे परीक्षा-भय और “मैं नहीं कर सकता” जैसी धारणाओं में कमी आ सकती है। स्पष्टता केवल उपलब्धि नहीं बढ़ाती; यह विद्यार्थी को कक्षा की अपेक्षाओं से समायोजित होने में सहायता देती है।

7.2 प्रश्नोत्तर और सहभागिता

प्रश्न पूछने की अनुमति कक्षा में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा का संकेत है। शिक्षक यदि गलत उत्तर पर उपहास के बजाय अन्वेषी प्रश्न करता है, तो विद्यार्थी त्रुटि को असफलता नहीं बल्कि सीखने की प्रक्रिया मानता है। इसके विपरीत कुछ तेज विद्यार्थियों तक संवाद सीमित रखना या प्रश्न को समय की बर्बादी मानना निष्क्रियता और दूरी पैदा करता है।

7.3 प्रतिपुष्टि का स्वरूप

“गलत है” जैसी सामान्य प्रतिक्रिया की तुलना में “यह चरण सही है, यहाँ तर्क को उदाहरण से जोड़ो” जैसी विशिष्ट प्रतिक्रिया अधिक विकासात्मक है। सुधारोन्मुख प्रतिपुष्टि विद्यार्थी को अपनी प्रगति पर नियंत्रण का अनुभव देती है। व्यक्तिगत अपमान, सार्वजनिक तुलना और व्यंग्य प्रतिपुष्टि को मूल्यांकन से दंड में बदल देते हैं।

7.4 मूल्यांकन की निष्पक्षता

विद्यार्थी केवल अंक नहीं देखते; वे प्रक्रिया में न्याय का अनुभव भी करते हैं। स्पष्ट मानदंड, समान नियम, पुनःप्रास के अवसर और उत्तर पर आधारित मूल्यांकन विश्वास को बढ़ाते हैं। पक्षपात की धारणा—चाहे वह जाति, लिंग, भाषा, आर्थिक स्थिति या पसंदीदा विद्यार्थी से जुड़ी हो—सामाजिक असुरक्षा और शिक्षक से दूरी उत्पन्न कर सकती है।

7.5 अनुशासन और स्वनियमन

अनुशासन का उद्देश्य यदि नियंत्रण मात्र हो, तो विद्यार्थी नियम का पालन निगरानी के कारण करता है।



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 14, Issue 1, January-March 2026

यदि शिक्षक नियमों का कारण समझाता है, सामूहिक मानदंड बनाता है और पुनर्स्थापनात्मक संवाद का उपयोग करता है, तो बाहरी अनुशासन धीरे-धीरे आत्म-अनुशासन में बदल सकता है। यह समायोजन का अधिक स्थायी रूप है।

8. शैक्षणिक व्यवहार का समग्र विकास पर प्रभाव

8.1 उच्च अपेक्षा और आत्म-प्रभावकारिता

शिक्षक की अपेक्षा विद्यार्थी के आत्मबोध को प्रभावित करती है। "तुमसे नहीं होगा" जैसी स्थिर धारणा कम प्रयास और परिहार को वैध बना सकती है, जबकि "यह कठिन है, पर उचित रणनीति और अभ्यास से संभव है" चुनौती और समर्थन का संतुलन बनाती है। उच्च अपेक्षा तभी विकासात्मक है जब संसाधन, समय, सहायता और त्रुटि-सहनशीलता उपलब्ध हों।

8.2 विभेदित शिक्षण और समावेशन

एक ही गति, एक ही उदाहरण और एक ही अभिव्यक्ति-प्रकार सभी विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त नहीं होता। भाषा, पूर्व-ज्ञान, सीखने की गति और विशेष आवश्यकताओं में विविधता को स्वीकार करने वाला शिक्षक वैकल्पिक उदाहरण, समूह-कार्य, दृश्य सामग्री और अतिरिक्त सहायता देता है। इससे "मैं इस कक्षा का वैध सदस्य हूँ" का अनुभव बनता है।

8.3 आलोचनात्मक चिंतन और सृजनात्मकता

यदि कक्षा केवल सही उत्तर खोजने पर केंद्रित हो तो विद्यार्थी जोखिम लेने से बच सकता है। खुले प्रश्न, बहुविकल्पी समाधान, तर्क की माँग, परियोजना और स्थानीय समस्या-आधारित कार्य सृजनात्मक तथा आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करते हैं। शिक्षक का व्यवहार तय करता है कि असामान्य उत्तर को तुरंत अस्वीकार किया जाएगा या उसके तर्क को समझा जाएगा।

8.4 नैतिक एवं सामाजिक विकास

कक्षा में निष्पक्षता, समयपालन, वचन-पालन और सम्मान का व्यवहार नैतिक शिक्षा का जीवंत रूप है। विद्यार्थी औपचारिक मूल्य शिक्षा से अधिक प्रभाव शिक्षक के व्यवहारिक उदाहरण से ग्रहण कर सकते हैं। शिक्षक जब असहमति को सम्मानपूर्वक संभालता है और अपनी त्रुटि स्वीकार करता है, तो उत्तरदायित्व और विनम्रता के सामाजिक मानक बनते हैं।

शैक्षणिक व्यवहार	मध्यस्थ प्रक्रिया	समायोजन परिणाम	विकासात्मक परिणाम
स्पष्ट अध्यापन	दक्षता-बोध	तनाव में कमी	संज्ञानात्मक विकास
स्वायत्तता-सहायक प्रश्न	मनोवैज्ञानिक सुरक्षा	सहभागिता	आलोचनात्मक चिंतन
सुधारोन्मुख प्रतिपुष्टि	आत्मनियमन	त्रुटि से निपटना	दृढ़ता
निष्पक्ष मूल्यांकन	विश्वास	सकारात्मक संबंध	न्याय-बोध
विभेदित सहायता	समावेशन	विद्यालयी जुड़ाव	व्यक्तिगत क्षमता

9. सह-पाठ्यचर्या संबंधी व्यवहार का समायोजन पर प्रभाव

9.1 अवसर-वितरण और सामाजिक स्वीकृति

सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ विद्यालय में पहचान के वैकल्पिक स्रोत उपलब्ध कराती हैं। जो विद्यार्थी अकादमिक परीक्षा में औसत है, वह खेल, संगीत, चित्रकला, मंच-संचालन या तकनीकी परियोजना में दक्ष हो सकता है। शिक्षक यदि केवल पहले से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को अवसर देता है तो गतिविधि सामाजिक पदानुक्रम को मजबूत कर सकती है; यदि वह प्रशिक्षण और घूमते अवसर देता है तो अधिक विद्यार्थियों को स्वीकृति और उपलब्धि का अनुभव मिलता है।

9.2 टीम-गतिविधियाँ और सहपाठी समायोजन

खेल, नाटक और समूह परियोजनाएँ भूमिका-वितरण, सहयोग, संघर्ष-समाधान और सामूहिक उत्तरदायित्व का अभ्यास कराती हैं। शिक्षक का हस्तक्षेप तब उपयोगी है जब वह टीम में प्रभुत्व, उपहास या



बहिष्करण को पहचानता है और सहभागिता के नियम स्थापित करता है। केवल जीत पर बल देने से कम कुशल विद्यार्थी किनारे हो सकते हैं; प्रक्रिया, प्रयास और खेलभावना पर बल सामाजिक समायोजन को बढ़ाता है।

9.3 मंच-अनुभव और आत्मविश्वास

वाद-विवाद, भाषण, नाटक, प्रदर्शनी और सभा विद्यार्थी को सार्वजनिक अभिव्यक्ति का अवसर देते हैं। संवेदनशील शिक्षक छोटे और सुरक्षित अवसरों से शुरुआत कर संकोची विद्यार्थियों को क्रमशः मंच तक ला सकता है। उपहास या जबरन प्रदर्शन के विपरीत यह क्रमिक समर्थन आत्मविश्वास और संप्रेषण-कौशल का निर्माण करता है।

9.4 परामर्श और भावनात्मक समर्थन

सह-पाठ्यचर्या संदर्भ में शिक्षक और विद्यार्थी का संवाद अपेक्षाकृत अनौपचारिक होता है। यही परिस्थिति कई बार विद्यार्थी को तनाव, मित्रता-संघर्ष, करियर-दुविधा या आत्म-संदेह साझा करने का अवसर देती है। शिक्षक को चिकित्सकीय भूमिका नहीं निभानी चाहिए, पर सक्रिय सुनना, गोपनीयता की मर्यादा, उचित मार्गदर्शन और आवश्यकता पर विशेषज्ञ सहायता तक पहुँच बनाना संरक्षणकारी भूमिका निभा सकता है।

9.5 विद्यालय से जुड़ाव

जब विद्यार्थी विद्यालय में किसी क्लब, टीम, हाउस, कला-समूह या सेवा-परियोजना से अर्थपूर्ण रूप से जुड़ा होता है, तो विद्यालय केवल परीक्षा देने का स्थान नहीं रहता। यह जुड़ाव उपस्थिति, सामाजिक पहचान और संस्थागत प्रतिबद्धता को मजबूत कर सकता है। शिक्षक की मान्यता और उपस्थिति इस जुड़ाव को स्थिरता देती है।

10. सह-पाठ्यचर्या व्यवहार और समग्र विकास

10.1 शारीरिक विकास

खेल और शारीरिक गतिविधि स्वास्थ्य, सहनशक्ति, समन्वय और सक्रिय जीवनशैली से जुड़ी है। शिक्षक यदि खेल को केवल चयनित खिलाड़ियों तक सीमित न रखकर व्यापक सहभागिता का माध्यम बनाए, तो शारीरिक सक्रियता अधिक समावेशी हो सकती है। शरीर-आधारित उपहास, अत्यधिक तुलना या दंडात्मक व्यायाम से बचना आवश्यक है, क्योंकि वे स्वास्थ्य-प्रेरणा के बजाय शर्म और परिहार उत्पन्न कर सकते हैं।

10.2 सृजनात्मक एवं सौंदर्यबोध विकास

कला, संगीत, नाटक और रचनात्मक लेखन विद्यार्थियों को भावनाओं और अनुभवों की वैकल्पिक अभिव्यक्ति देते हैं। शिक्षक यदि केवल सही प्रस्तुति की नकल करवाता है तो सृजनात्मकता सीमित हो सकती है; यदि वह प्रयोग, स्थानीय कला, व्यक्तिगत शैली और चिंतन को स्थान देता है तो कल्पना और सौंदर्यबोध विकसित होते हैं।

10.3 नेतृत्व और नागरिकता

छात्र परिषद, हाउस व्यवस्था, क्लब और सामुदायिक सेवा नेतृत्व को पद प्राप्त करने तक सीमित न रखकर जिम्मेदारी, सुनने की क्षमता, निर्णय और जवाबदेही का अभ्यास बना सकती है। शिक्षक यदि नेतृत्व भूमिकाएँ बार-बार कुछ ही विद्यार्थियों को देता है तो लोकतांत्रिक उद्देश्य कमजोर पड़ता है। घूमते नेतृत्व, सह-नेतृत्व और कार्य-आधारित जिम्मेदारी अधिक समावेशी विकल्प हैं।

10.4 जीवन-कौशल

कार्यक्रम आयोजन में योजना, समय-सीमा, सहयोग, समस्या-समाधान, संचार और समीक्षा जैसी वास्तविक जीवन क्षमताएँ शामिल होती हैं। शिक्षक इन अनुभवों को सीखने में बदलने के लिए गतिविधि के बाद चिंतन करा सकता है—क्या अच्छा हुआ, कहाँ संघर्ष हुआ, अगली बार क्या बदलेंगे। इस प्रकार अनुभव से सीखने का चक्र पूरा होता है।

10.5 पहचान और आत्मसम्मान



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 14, Issue 1, January-March 2026

किशोरावस्था में पहचान-निर्माण महत्वपूर्ण होता है। शिक्षक द्वारा विविध प्रतिभाओं की सार्वजनिक मान्यता विद्यार्थी को यह संदेश देती है कि उसकी योग्यता केवल परीक्षा-अंक से परिभाषित नहीं है। यह विशेषकर उन विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है जिन्हें अकादमिक तुलना में लगातार कमतर अनुभव होता है।

11. सकारात्मक और नकारात्मक शिक्षक व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण

क्षेत्र	सकारात्मक व्यवहार	नकारात्मक व्यवहार	संभावित प्रभाव
संप्रेषण	सम्मानपूर्ण, स्पष्ट, सुनने वाला	व्यंग्य, अपमान, सार्वजनिक डाँट	सुरक्षा बनाम भय
प्रश्नोत्तर	गलती को सीखने का अवसर	गलत उत्तर पर उपहास	जिज्ञासा बनाम मौन
मूल्यांकन	पारदर्शी मानदंड	पक्षपात, केवल तुलना	विश्वास बनाम असंतोष
अनुशासन	कारण-आधारित	अत्यधिक दंड, धमकी	आत्मनियमन बनाम भय
सह-पाठ्यचर्या	समावेशी अवसर	केवल विजेताओं पर ध्यान	जुड़ाव बनाम बहिष्करण
अपेक्षा	उच्च अपेक्षा + सहायता	लेबलिंग	दृढ़ता बनाम असहायता
विविधता	पृष्ठभूमि का सम्मान	रूढ़िबद्धता व भेदभाव	समावेशन बनाम कुसमायोजन

11.1 भय-आधारित अनुशासन का चक्र

भय तत्काल शांति उत्पन्न कर सकता है, पर यह सीखने की गुणवत्ता का प्रमाण नहीं है। विद्यार्थी दंड से बचने के लिए चुप रह सकता है, पर प्रश्न पूछने, सहायता माँगने और गलती स्वीकार करने से भी बच सकता है। इससे शिक्षक को कक्षा अनुशासित दिखाई देती है जबकि भीतर संलग्नता कम हो सकती है। दीर्घकाल में यह अनुपस्थिति, नकल, निष्क्रियता या विरोधी व्यवहार में व्यक्त हो सकता है।

11.2 पक्षपात और सामाजिक तुलना

लगातार टॉपर को आदर्श और अन्य विद्यार्थियों को तुलना का विषय बनाना उपलब्धि को सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ देता है। तुलना कभी-कभी प्रेरक हो सकती है, किंतु बार-बार की सार्वजनिक तुलना आत्मसम्मान और सहपाठी संबंधों पर दबाव डालती है। प्रगति-आधारित तुलना—विद्यार्थी की वर्तमान उपलब्धि की उसकी पूर्व उपलब्धि से तुलना—अधिक विकासोन्मुख है।

11.3 डिजिटल व्यवहार

डिजिटल प्लेटफॉर्म, संदेश समूह और ऑनलाइन कक्षा में भी शिक्षक व्यवहार का प्रभाव बना रहता है। समय-सीमा, प्रतिक्रिया, डिजिटल शिष्टाचार, सार्वजनिक रूप से अंक साझा न करना, छात्र की निजता और ऑनलाइन सहभागिता के अवसर आधुनिक शिक्षक व्यवहार के आवश्यक आयाम हैं। डिजिटल असमानता को आलस्य मान लेना वंचित विद्यार्थियों को और पीछे कर सकता है।

12. विद्यार्थी समायोजन के आयामों पर समेकित प्रभाव

12.1 शैक्षणिक समायोजन

शैक्षणिक समायोजन तब बेहतर होता है जब विद्यार्थी को कार्य की अपेक्षा समझ आती है, सहायता उपलब्ध होती है और त्रुटि पर सुधार का अवसर मिलता है। शिक्षक की स्पष्टता, प्रतिपुष्टि और यथार्थवादी चुनौती अध्ययन-अभ्यास को संरचना देती है। सह-पाठ्यचर्या में मिली सफलता भी अकादमिक आत्मविश्वास को अप्रत्यक्ष रूप से सहारा दे सकती है, क्योंकि विद्यार्थी स्वयं को सक्षम व्यक्ति के रूप में अनुभव करता



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 14, Issue 1, January-March 2026

है।

12.2 सामाजिक समायोजन

समूह-कार्य, खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों में शिक्षक द्वारा बनाए गए नियम सहपाठी संस्कृति को प्रभावित करते हैं। सम्मान, साझा जिम्मेदारी और बहिष्करण-विरोधी मानदंड सामाजिक स्वीकृति को बढ़ाते हैं। शिक्षक यदि मज़ाक के नाम पर अपमान को अनदेखा करता है तो पीड़ित विद्यार्थी के लिए विद्यालय असुरक्षित हो सकता है।

12.3 भावनात्मक समायोजन

भावनात्मक समायोजन में शिक्षक की उपलब्धता और प्रतिक्रिया-शैली विशेष महत्त्व रखती है। विद्यार्थी को विश्वास होना चाहिए कि कठिनाई बताने पर उसे अपमानित नहीं किया जाएगा। नियमित चेक-इन, भावनाओं की वैधता स्वीकार करना, तनाव-प्रबंधन के सरल अभ्यास और आवश्यकता पर विशेषज्ञ सहायता तक संदर्भित करना विद्यालयी संरक्षण-तंत्र को मजबूत करते हैं।

12.4 व्यवहारिक समायोजन

व्यवहारिक समायोजन नियमों के अर्थपूर्ण पालन, समय-प्रबंधन और उत्तरदायित्व से जुड़ा है। शिक्षक यदि नियमों को स्थिर, न्यायपूर्ण और पूर्वानुमेय रखता है तो विद्यार्थी को व्यवहार की सीमाएँ स्पष्ट होती हैं। असंगत अनुशासन—एक ही व्यवहार पर अलग विद्यार्थियों को अलग प्रतिक्रिया—न्याय-बोध को कमजोर करता है।

12.5 संक्रमणकालीन समायोजन

नई कक्षा, प्राथमिक से माध्यमिक स्तर, बोर्ड कक्षा या नए विद्यालय में प्रवेश के समय विद्यार्थी विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं। परिचय गतिविधियाँ, सहपाठी-बड़ी प्रणाली, शिक्षक से प्रारंभिक व्यक्तिगत संवाद और सह-पाठ्यचर्या में त्वरित सहभागिता नए वातावरण से जुड़ाव को आसान बना सकती है।

समेकित रूप से सकारात्मक समायोजन का अर्थ केवल नियम मानना नहीं, बल्कि विद्यालय में सक्रिय, सुरक्षित, सक्षम और संबंधित महसूस करना है। शिक्षक व्यवहार इन चारों अनुभवों को आकार देता है।

13. समग्र विकास की विश्लेषणात्मक रूपरेखा

विकास आयाम	शैक्षणिक योगदान	सह-पाठ्यचर्या योगदान	शिक्षक की भूमिका
संज्ञानात्मक	समस्या-समाधान, तर्क	परियोजना, क्विज़	जिज्ञासा व चुनौती
सामाजिक	समूह-अधिगम	टीम, नाटक, सेवा	सहयोग व समावेशन
भावनात्मक	त्रुटि-सुरक्षा	अभिव्यक्ति, परामर्श	संवेदनशीलता
शारीरिक	स्वास्थ्य ज्ञान	खेल, योग	सुरक्षित सहभागिता
सृजनात्मक	खुले प्रश्न	कला, संगीत, लेखन	प्रयोग की स्वतंत्रता
नैतिक/नागरिक	निष्पक्ष नियम	सेवा, छात्र परिषद	मॉडलिंग
जीवन-कौशल	योजना, आत्मनियमन	आयोजन, नेतृत्व	चिंतन व मार्गदर्शन

13.1 एकीकृत दृष्टि

समग्र विकास की दृष्टि से शैक्षणिक और सह-पाठ्यचर्या के बीच कठोर विभाजन उपयोगी नहीं है। गणितीय परियोजना में सहयोग सामाजिक कौशल सिखा सकता है; नाटक भाषा-अभिव्यक्ति को मजबूत कर सकता है; खेल डेटा विश्लेषण का संदर्भ बन सकता है; पर्यावरण क्लब विज्ञान, नागरिकता और स्थानीय समस्या-समाधान को जोड़ सकता है। शिक्षक का कार्य इन अनुभवों के बीच संबंध स्पष्ट करना है।

13.2 शिक्षक एक विकास-सुविधादाता के रूप में

विकास-सुविधादाता शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी को समान परिणाम देने का दावा नहीं करता, बल्कि सार्थक



अवसर, समर्थन और सम्मान की समानता सुनिश्चित करता है। वह प्रतिभा की विविधता को पहचानता है, असफलता को कलंकित नहीं करता, विद्यार्थी की आवाज़ सुनता है और आवश्यकता पर अतिरिक्त सहायता की व्यवस्था करता है।

13.3 विद्यालयी संस्कृति की भूमिका

व्यक्तिगत शिक्षक का सकारात्मक व्यवहार तभी टिकाऊ बनता है जब विद्यालयी संस्कृति उसका समर्थन करे। यदि समय-सारिणी में सह-पाठ्यचर्या के लिए वास्तविक समय न हो, परीक्षा-परिणाम ही एकमात्र प्रदर्शन-सूचक हों, या शिक्षक पर अत्यधिक प्रशासनिक भार हो, तो समग्र दृष्टि व्यवहार में कमजोर पड़ सकती है। इसलिए शिक्षक-व्यवहार का सुधार संस्थागत समर्थन से जुड़ा होना चाहिए।

13.4 अभिभावक साझेदारी

अभिभावकों के साथ संवाद में केवल शिकायत या अंक साझा करना पर्याप्त नहीं है। शिक्षक यदि विद्यार्थी की रुचि, प्रगति, सामाजिक व्यवहार और सह-पाठ्यचर्या सहभागिता पर संतुलित प्रतिक्रिया देता है, तो घर और विद्यालय के संदेशों में सामंजस्य बढ़ता है और बच्चे पर विरोधाभासी अपेक्षाओं का दबाव कम हो सकता है।

14. प्रमुख निष्कर्ष एवं विमर्श

प्रथम, शिक्षक का शैक्षणिक व्यवहार विद्यार्थी के समायोजन पर केवल उपलब्धि के माध्यम से प्रभाव नहीं डालता। स्पष्टता, प्रश्नोत्तर, प्रतिपुष्टि और निष्पक्ष मूल्यांकन भावनात्मक सुरक्षा तथा दक्षता-बोध को भी आकार देते हैं। इसलिए अच्छा अध्यापन तकनीकी दक्षता और संबंधपरक संवेदनशीलता दोनों का संयोजन है।

द्वितीय, सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों का विकासात्मक मूल्य उनकी उपस्थिति मात्र में नहीं, बल्कि संचालन की गुणवत्ता में है। चयनवादी और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी संस्कृति बहिष्करण बढ़ा सकती है, जबकि समावेशी अवसर-वितरण, प्रयास की मान्यता और चिंतनात्मक मार्गदर्शन नेतृत्व, सहयोग, आत्मविश्वास तथा विद्यालयी जुड़ाव को मजबूत करते हैं।

तृतीय, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध दोनों क्षेत्रों को जोड़ने वाला केंद्रीय सेतु है। विद्यार्थी उस शिक्षक से अधिक सीखने, प्रश्न पूछने और गतिविधि में भाग लेने को तैयार होता है जिसके साथ उसे सम्मान और भरोसे का अनुभव होता है। संबंधबोध सीखने का विकल्प नहीं, बल्कि अनेक स्थितियों में सीखने की पूर्व-शर्त है।

चतुर्थ, अपमान, पक्षपात, लेबलिंग, सार्वजनिक तुलना और भय-आधारित अनुशासन तत्काल नियंत्रण दे सकते हैं, किंतु दीर्घकालीन समायोजन और आत्मनियमन के प्रतिकूल हो सकते हैं। विशेषकर संवेदनशील या हाशिए पर स्थित विद्यार्थियों के लिए यह प्रभाव अधिक गंभीर हो सकता है।

15. शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

- शिक्षक-प्रशिक्षण में विषय-ज्ञान के साथ कक्षा-संप्रेषण, सामाजिक-भावनात्मक समर्थन, समावेशी अनुशासन और प्रतिपुष्टि-कौशल को अनिवार्य बनाया जाए।
- विद्यालय स्तर पर दंडात्मक निरीक्षण के बजाय सहकर्मि अवलोकन, मॉटरिंग और चिंतनात्मक डायरी जैसी विकासोन्मुख प्रणालियाँ अपनाई जाएँ।
- सह-पाठ्यचर्या अवसरों का मानचित्र बनाकर प्रत्येक विद्यार्थी को अर्थपूर्ण भूमिकाएँ दी जाएँ।
- सार्वजनिक रैंकिंग, अपमानजनक तुलना और कमज़ोर विद्यार्थी जैसी लेबलिंग से बचने के लिए आचार-संहिता हो।
- समग्र प्रगति रिपोर्ट में सहयोग, संप्रेषण, सृजनात्मकता, जिम्मेदारी और आत्मनियमन पर वर्णनात्मक प्रतिपुष्टि दी जाए।
- विद्यार्थी-आवाज़ को कक्षा नियम, क्लब चयन और गतिविधि समीक्षा में स्थान दिया जाए।



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 14, Issue 1, January-March 2026

- शिक्षक-अभिभावक संवाद को परीक्षा परिणाम से आगे बढ़ाकर रुचि, कल्याण और विकासात्मक प्रगति तक विस्तृत किया जाए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत विश्लेषण से निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षक का शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यचर्या संबंधी व्यवहार विद्यार्थी के विद्यालयी अनुभव का केंद्रीय नियामक है। शिक्षक की भूमिका ज्ञान-संचरण, अनुशासन और परीक्षा की सीमाओं से आगे जाकर संबंध-निर्माण, प्रेरणा, अवसर-सृजन, सामाजिक-भावनात्मक सुरक्षा और प्रतिभा-विकास तक विस्तृत होती है। सकारात्मक शिक्षक व्यवहार विद्यार्थी को विद्यालय के साथ समायोजित होने में सहायता देता है क्योंकि वह अपेक्षाओं को स्पष्ट, सहायता को उपलब्ध और संबंधों को सम्मानपूर्ण बनाता है।

समग्र विकास की दृष्टि से सबसे प्रभावी स्थिति वह है जहाँ कक्षा और सह-पाठ्यचर्या परस्पर पूरक हों। विद्यार्थी को सीखने, खेलने, रचने, नेतृत्व करने, सहयोग करने और अपनी आवाज़ व्यक्त करने के अवसर मिलें; शिक्षक इन अवसरों में निष्पक्षता, संवेदनशीलता और उच्च अपेक्षा का संतुलन बनाए। इस प्रकार शिक्षक व्यवहार शिक्षा की छिपी पाठ्यचर्या बन जाता है—विद्यार्थी उससे यह सीखता है कि ज्ञान, व्यक्ति, विविधता, असफलता और सहयोग का मूल्य क्या है।

अतः विद्यालयी गुणवत्ता के आकलन में केवल परीक्षा-परिणाम पर्याप्त नहीं हैं। यह भी देखा जाना चाहिए कि शिक्षक विद्यार्थियों से कैसे संवाद करते हैं, किसे अवसर मिलता है, गलती पर क्या प्रतिक्रिया होती है, गतिविधियों में कौन शामिल या बहिष्कृत होता है, और क्या विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित तथा सम्मानित महसूस करते हैं। भविष्य के अनुभवजन्य अध्ययनों में विभिन्न विद्यालय प्रकारों, आयु-समूहों और सामाजिक पृष्ठभूमियों में शिक्षक व्यवहार, समायोजन और समग्र विकास के संबंधों का प्रत्यक्ष मापन किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

- 1) बंडूरा, ए. (1977)। *Social Learning Theory*। प्रेंटिस-हॉल।
- 2) ब्रॉनफेनब्रेनर, यू. (1979)। *The Ecology of Human Development*। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- 3) डेसी, ई. एल., एवं रयान, आर. एम. (2000)। "The 'What' and 'Why' of Goal Pursuits: Human Needs and the Self-Determination of Behavior." *Psychological Inquiry*, 11(4), 227–268।
- 4) डर्लाक, जे. ए., एवं अन्य (2011)। "The Impact of Enhancing Students' Social and Emotional Learning: A Meta-Analysis of School-Based Universal Interventions." *Child Development*, 82(1), 405–432।
- 5) हैमरे, बी. के., एवं पियांटा, आर. सी. (2001)। "Early Teacher–Child Relationships and the Trajectory of Children's School Outcomes Through Eighth Grade." *Child Development*, 72(2), 625–638।
- 6) हैटी, जे. (2009)। *Visible Learning: A Synthesis of Over 800 Meta-Analyses Relating to Achievement*। रूटलेज।



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 14, Issue 1, January-March 2026

- 7) हैटी, जे., एवं टिम्परली, एच. (2007)। "The Power of Feedback." *Review of Educational Research*, 77(1), 81–112।
- 8) पियांटा, आर. सी., हैमरे, बी. के., एवं एलन, जे. पी. (2012)। "Teacher–Student Relationships and Engagement." In *Handbook of Research on Student Engagement*। सिंगर।
- 9) रयान, ए. एम., एवं पैट्रिक, एच. (2001)। "The Classroom Social Environment and Changes in Adolescents' Motivation and Engagement During Middle School." *American Educational Research Journal*, 38(2), 437–460।
- 10) वेंडज़ेल, के. आर. (1998)। "Social Relationships and Motivation in Middle School: The Role of Parents, Teachers, and Peers." *Journal of Educational Psychology*, 90(2), 202–209।
- 11) भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (National Education Policy 2020)*। भारत सरकार।
- 12) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। (2023)। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा: विद्यालयी शिक्षा 2023 (National Curriculum Framework for School Education 2023)*। नई दिल्ली: NCERT।